सच कहने की ताकत

जालंधर ब्रीज

साप्ताहिक समाचार पत्र

• RNI NO.:PUNHIN/2019/77863 • www.jalandharbreeze.com

• JALANDHAR BREEZE • WEEKLY • YEAR-1 • EDITOR: ATUL SHARMA • 15 NOVEMBER TO 21 NOVEMBER 2019 • VOLUME-14 • PAGES- 4 • RATE- 3/- • Mobile: 99881-15514 • email:atul_editor@jalandharbreeze.com

सफलता की कुंजी

संभव की सीमा जानने का केवल एक ही तरीका हैं। असंभव से भी आगे निकल जाना।

-स्वामी विवेकानंद

अनमोल विचार

बहरों को सुनाने के लिए धमाकों की जरूरत होती हैं

- शहीद भगत सिंह

अफसर हो गये मालामाल फुटओवर ब्रिज को पड़े-पड़े लग गया जंगाल

जनता के पैसों की बर्बादी: नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी कालेज के बाहर और रामामंडी पुल के करीब सड़क के किनारे पड़े करोड़ों रुपये से बने फुटओवर ब्रिज जंग की चपेट में।

■ जालंधर से प्रभात सूरी की विशेष रिपोर्ट

राजमार्गो के रोड-बर्म पर पड़े फुट ओवर ब्रिज के ढाँचे जिन पर करोड़ों रुपये खर्च किये जा चुके है वो सड़क पर पड़े-पड़े जंग का शिकार हो चुके परन्तु अफसरों के सेहत पर इस बात का कोई असर नहीं है कि जिस मकसद के लिए ये बनाये गये है उससे उनको कोई लेना देना नहीं है क्योंकि इन्हें किसी भी काम करवाने के बदले ठेका प्राप्त कंपनी से कमिशन वसूलनी होती है। इन भ्रष्ट अफसरों के खिलाफ क्यों नहीं सरकार सख्त कार्रवाई करती जिनकी वजह से लोग पैदल सड़क पार करते समय हादसों का शिकार हो के अपाहिज हो रहे है और कुछ इस दुनिया को अलविदा कह चुके है लेकिन अफसरों और ठेकेदारों के नैक्सस को खत्म करना लगता है सरकार के बस का काम नहीं है क्योंकि एक फुटओवर ब्रिज को बनाने का खर्च 60 से 65 लाख रूपये आता है और इसका सीधा फायदा अफसरों को 8 से 10 प्रतिशत कमिश्न के रूप में मिलता है इसलिए वो बिल के समय यह नहीं देखते कि ठेका प्राप्त कंपनी द्वारा जिस का पैसा बिल पेश करके वसूला जा रहा है वो पूरा भी हो चुका है या नहीं परन्तु भ्रष्ट अफसरों को इस बात से क्या मतलब इसका उदाहरण आपको भारत का एक प्रमुख इंजीनरिंग कालेज जो कि सरकारी होने के बावजूद हजारों छात्र रोज़ाना सड़क के दूसरी तरफ जाने के लिए अपनी जान को खतरे में डाल कर सड़क को पार करते हैं क्योंकि यह कालेज जालंधर अमृतसर रोड़ पर स्थित है और रोज़ाना तेज वाहन कालेज के आगे से गुजरते है परन्तु हैरानी की बात ये है कालेज के बाहर तैयार फुटआवर ब्रिज बना कर तैयार रखा हुआ है पर समझ से परे है नैशनल हाईवे उसको चालू करने के लिये किस से महुर्त निकलवाना चाहता है।

उच्चाधिकारियों और विभाग के मंत्री को इस बात का कड़ा संज्ञान लेते हुए इन भ्रष्ट अफसरों पर कार्रवाई की सिफारिश करें और जिन लोगों की सड़क क्रोसिंग में जान गई उनको मुआवजा प्रदान करें और लोगों के पैसे की हो रही बर्बादी की वसूली इन भ्रष्ट अफसरों से करें।

ठेका प्राप्त कंपनी के साथ तय की गई शर्तों की धज्जियां उड़ा रहे है भ्रष्ट अफसर

सुविधाओं से वंचित जालंधर-लुधियाना-लाडोवाल टोल प्लाजा का शौचालय।

जालंधर/प्रभात सूरी

देश में स्वच्छता अभियान ने एक आंदोलन रूप ले लिया है और धीरे-धीरे देश का युवा इसमें सहयोग करने लगा है। पौधारोपण से लेकर जल बचाने के कार्यक्रम देश में हो रहे है परन्तु अगर नहीं सुधर रहा तो वह है राष्ट्रीय सड़क परिवहन प्राधिकरण। लगता है यह विभाग सकर्स के गधे की भांति मैं न मानु वाली नीति अपना रहा है। नैशनल हाईवे पर बने टोल प्लाजा पर रुकने वाले वाहनों और उनमें यात्रा कर रहे लोगों की सुविधा के लिए सरकार की ओर से दिए गये दिशा-निर्देशों एवं नियमों के अनुसार टोल प्लाजा पर जन-सुविधाएं उपलब्ध करवाना आवश्यक है। इनमें जैसे कि शौचालय की व्यवस्था, पीने के जल की व्यवस्था एवं प्राथमिकता चिकित्सा तथा अल्पाहार जैसी सुविधा देना अति अवश्यक है परन्तु अर्ध निर्मित मार्गों का टोल टैक्स बटोरने वाले यह टोल प्लाजा जनता के साथ धोखा कर रहे है। पूरी सड़क का निर्माण होने और सभी रोड साईन बोर्ड तथा मार्गों का सौदर्यकरण उपरान्त ही टोल टैक्स वसूल किया जाना चाहिए था परन्तु व्यवस्था में अवश्य कहीं कुछ त्रुटियां है जिसे सरकार को राष्ट्रीय सड़क परिवहन मंत्रालय को संज्ञान लेते हुए सुधार करना चाहिए। अन्यथा जनता अपने अधिकार को प्रयोग करना पड़ सकता है।

प्रशांत किशोर शायद भूल गए कि वो जिस राजनीति के कॉलेज के छात्र हैं, अमित शाह उस कॉलेज के प्रिंसिपल

हड़बड़ी हमेशा ही अच्छी नहीं होती। आदित्य ठाकरे को लेकर संजय राउत उस वक्त कुछ ज्यादा ही बोल गये। चंद्रयान 2 तो चंद्रमा पर नहीं उतर सका, लेकिन शिवसेना सुनिश्चित करेगी कि आदित्य मंत्रालय के छठे फ्लोर पर 21 अक्टूबर को जरूर पहुंच जायें। सामना के संपादक संजय राउत ये तुलना चंद्रमा और सूरज के हिसाब से कर रहे थे- क्योंकि आदित्य सूर्य का ही एक नाम है। महाराष्ट्र विधानसभा में आदित्य ठाकरे अपने परिवार के पहले सदस्य थे जो चुनाव लड़ रहे थे। इस लिहाज से उनके लिए ये चुनाव बहुत महत्वपूर्ण बताया जा रहा था। बिहार राजनीति, कूटनीति और अर्थशास्त्र के पंडित माने जाने वाले चाणक्य की धरती है, जिसने चंद्रगुप्त मौर्य को पाटिलपुत्र पर राज करने के तरीकों और राजनीति के रहस्यों से रूबरू करवाया था। लेकिन वर्तमान में मगध के आधुनिक चाणक्य जिसने बचपन में चाय बेचने वाले नरेंद्र मोदी की चुनावी रणनीति की कमान को संभालते हुए लोकसभा चुनाव 2014 में उनका प्याला वोटों से भर दिया, फिर नीतीश कुमार को बिहार में बहार हो नीतेशे कुमार हो के नारे के साथ फिर से राज्य की सर्वोच्च कुर्सी पर काबिज किया और अमरिंदर सिंह को पंजाब का कैप्टन बना दिया।

उसी प्रशांत किशोर को ठाकरे परिवार की तीसरी पीढ़ी को जीत दिलाने और आदित्य ठाकरे को एक बड़े नेता के रूप में स्थापित करने की जिम्मेदारी मिली। प्रशांत किशोर ने आदित्य ठाकरे के लिए जन आशीर्वाद यात्रा, आदित्य ठाकरे संवाद जैसे प्रोग्राम बनाए। आदित्य ठाकरे को चुनाव में जीत तो हासिल हुई लेकिन शिवसेना को चुनाव में उतनी सफलता नहीं मिल पाई। प्रशांत किशोर शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे के सलाहकार के रूप में काम कर रहे थे। खबरों के अनुसार किशोर की सलाह पर ही उद्धव ठाकरे के मन में शिवसेना के मुख्यमंत्री की इच्छा जगी। जिसके बाद महाराष्ट्र में गद्दी के लिए महाभारत देखने को मिला। माना जा रहा है की पीके इस तरह से एक तीर से दो निशाना साधना चाह रहे थे। जिसमें अगले साल बिहार विधानसभा चुनाव में जदयू को सीटों के बंटवारे में बीजेपी पर दबाव बनान आसान होगा, तो वहीं

शेष पृष्ठ 3 पर »

किससे करें शिकायत और किसकी दे दुहाई

जालंधर/नीरज

पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी ने स्वयं माना था कि सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधायें जनता तक पहुंचते 100 रूपये से 15 रूपये ही रह जाती है भाव कि रास्ते में मौजूद बिचौलीये ही 85 प्रतिशत डकार जाते है और पात्र व्यक्ति केवल 15 प्रतिशत ही प्राप्त कर पाता है।

यहीं बात आजकल स्वास्थ विभाग में चल रही और बैड (बिस्तर) खाली पड़े है परन्तु फिर भी एक बैड पर दो-दो मरीज पड़े है। अलग-अलग रोगों के इन मरीजों को एक ही बिस्तर पर इलाज क्या घातक सिद्ध नहीं होगा। मशीनरी है परन्तु टैस्ट के लिए मरीजों को बाहर जाना पड़ता है।

केवल सस्ती दवायें ही सरकारी अस्पताल से मिलती है और महंगी दवायें डाक्टर द्वारा बाजार से खरीदने के लिए लिखा जाता है।

पर्ची बनवाने के लिये बच्चों से लेकर बूढों तक के लिए एक ही लाईन है। बच्चों और गर्भवती महिलाओं तक को बैठने की सुविधा नहीं है। पीने के पानी की स्वच्छता के नाम पर कहीं कोई एक आधा

वाटर कूलर लगा हो तो गनीमत है। हर रोज़ नई बिल्डिगें अवश्य देखने को मिलेगी पर उपचार वहीं पुराने ढंग से ही हो रहा है।

कहीं कोई नवीनता या आधुनिकीकरण की झलक नहीं नज़र आती। व्यवस्था का निरीक्षण कभी होता होगा लगता नहीं। यहां तक मार्गदर्शक साईन बोर्ड तक उल्टे लटकाये गये है।

सरकार की ओर से मिलने वाले ढेरों फण्ड कहां खर्च हो जाते है। न साफ चादरे, न कंबल, मरीजों द्वारा खुद के घर से लाए गए बैड व बिस्तरों दिखाई देते है। लेटे मरीज फर्शों पर पड़ी चिकनाहट और गंदगी से फिसल कर कब कोई जख्मी हो जाये पता नहीं सरकार और प्रशासन द्वारा समय-समय पर निरीक्षण अत्याधिक आवश्यक है। खराब पड़ी मशीनरी और अन्य अनउपलब्ध सुविधाओं के प्रति स्वेदनशीलता से चिंतन होना और सुविधायें उपलब्ध करवाना चिकित्कों एवं अस्पताल प्रबंधक का कार्य है।

सरकार चाहे कुपोषण के विरूद्ध प्रोग्राम बनाये स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाए आयुष्मान लाए या 108 एम्बूलैंस चलाये कार्य तो प्रबंधन को ही करना है परन्तु वे इसके लिए तत्पर नहीं उदासीन नज़र आता है शिकायत करें भी तो किससे कौन सुनेगा आम आदमी की।

चौकीदार चोर है वाले बयान पर राहुल की माफी कुबूल, सुप्रीमकोर्ट ने साथ में दी नसीहत

नई दिल्ली/न्यूज नेटवर्क

सुप्रीम कोर्ट ने राहुल की माफी स्वीकार की। जस्टिस संजय कौल ने कहा कि जांच की जरूरत नहीं। लेकिन मोदी पर राहुल का बयान दुभाग्यपूर्ण है। साथ ही कोर्बट ने राहुल गांधी को नसीहत देते हुए कहा कि भविष्य में वो इस तरह की टिप्पणी के प्रति सावधानी बरतें। बता दें कि सुप्रीम कोर्ट ने आज राफेल डील के साथ ही कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी के खिलाफ दायर आपराधिक अवमानना याचिका पर भी फैसला सुनाया। यह याचिका बीजेपी नेता मीनाक्षी लेखी की ओर से दायर की गई थी, जिसमें आरोप लगाया गया कि राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधने के लिए राफेल डील मामले पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले को तोड़मरोड़ कर पेश किया, जिससे कोर्ट की अवमानना हुई है। बीजेपी सांसद मीनाक्षी लेखी ने अपनी याचिका में आरोप लगाया था कि राहुल गांधी ने अपनी चुनावी रैलियों में बार-बार कहा है, अब तो सुप्रीम कोर्ट ने भी मान लिया है कि चौकीदार चोर है। गौरतलब है कि राहुल गांधी का यह बयान राफेल डील पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद आया था। इस मामले में राहुल गांधी ने बिना शर्त माफीनामा भी दाखिल किया था, लेकिन अदालत ने तब उन्हें कोई राहत नहीं दी थी। सुप्रीम कोर्ट ने याचिका पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि कोर्ट की ओर से ऐसा कोई बयान नहीं दिया गया है. साथ ही चीफ जस्टिस की बेंच ने साफ कर दिया था कि कोर्ट ऐसी टिप्पणी कर ही नहीं सकता है।

उक्ति

जो तर्क को अनसुना कर देते हैं, वे कट्टर हैं। जो तर्क ही नहीं कर सकते, वे मूर्ख हैं और जो तर्क करने का साहस ही नहीं दिखा सकते, वे गुलाम हैं। गुलामों की ही संख्या ज्यादा है।

■ विलियम डूमंड

www.jalandharbreeze.com

साप्ताहिक
15 नवंबर से 21 नवंबर 2019
जालंधर ब्रीज

प्रसंग

आधुनिक भारत के निर्माता पंडित नेहरू

देश के पूर्व राष्ट्रपति, विद्वान दार्शनिक और शिक्षाविद डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने पंडित नेहरू का भारतीय इतिहास में सटीक मूल्यांकन किया है 'जवाहर लाल नेहरू हमारी पीढ़ी के एक महानतम व्यक्ति थे। वह एक ऐसे अद्वितीय राजनीतिज्ञ थे, जिनकी मानव-मुक्ति के प्रति सेवाएं चिरस्मरणीय रहेंगी।' पंडित नेहरू की देश के प्रति जिस तरह की सोच थी, वह हर समय प्रासंगिक थी और रहेगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से एक पंडित जवाहर लाल नेहरू का भारतीय इतिहास में अविस्मरणीय योगदान है। स्वतंत्रता आंदोलन में वे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के साथ अंग्रेजों के खिलाफ लड़े। 'असहयोग आंदोलन' हो या फिर 'नमक सत्याग्रह' या 1942 का 'भारत छोड़ो आंदोलन' उन्होंने हर आंदोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। परतंत्र भारत में पंडित नेहरू का महत्व जहां देश को स्वतंत्र कराने के लिए किए गए उनके अथक प्रयासों के चलते है, तो वहीं स्वतंत्र भारत में उनके द्वारा आधुनिक जीवन मूल्यों के प्रचार-प्रसार की वजह से। जातीय तथा धार्मिक विभिन्नताओं के बावजूद उन्होंने हमेशा देश की एकता और अखंडता पर ही जोर दिया। नेहरू देश को वैज्ञानिक खोजों और तकनीकी विकास के आधुनिक दौर में ले जाने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। उन्होंने देश में दलितों, पिछड़ों और हाशिए से नीचे रहने वाले वंचित जनों के प्रति जागरूकता पैदा करने का महती कार्य किया। लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उनकी अगाध आस्था थी और वे चाहते थे यही आस्था देशवासियों के दिल में भी हो। लिहाजा इसके लिए उन्होंने अथक प्रयास किए।

14 नवंबर-1889 को इलाहाबाद में जन्मे जवाहरलाल नेहरू के पिता पं. मोतीलाल नेहरू, खुद एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। जाहिर है देशभक्ति का प्राथमिक पाठ उन्होंने अपने घर से ही सीखा। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। बाद में उन्होंने दुनिया के कुछ बेहतरीन स्कूलों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त की। स्कूली शिक्षा हैरो से, उच्च शिक्षा ट्रिनिटी कॉलेज, लंदन और कैंब्रिज से उन्होंने कानून की पढ़ाई पूरी की। पढ़ाई की वजह से उनके सात साल इंग्लैंड में बीते। इंग्लैंड के माहौल ने उनके अंदर फैबियन समाजवाद और आयरिश राष्ट्रवाद दोनों के लिए कंसंगत दृष्टिकोण विकसित किया। जवाहरलाल नेहरू अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद 1912 में भारत लौटे और वकालत शुरू कर दी। मगर वकालत में उनकी दिलचस्पी ज्यादा दिन तक नहीं रही। देश में चल रही स्वतंत्रता संग्राम की घटनाएं उन्हें आंदोलित कर रही थीं और एक दिन ऐसा आया कि वे भी इस आंदोलन में शामिल हो गए।

1917 में वे होम रूल लीग में शामिल हुए। लेकिन राजनीति में उनका सही पर्दापण दो साल बाद यानी साल 1919 में हुआ, जब वे महात्मा गांधी के संपर्क में आए। उस समय गांधी ने रॉलेट अधिनियम के खिलाफ एक अभियान शुरू किया था। नेहरू, गांधी जी द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न स्वतंत्रता आंदोलनों के प्रति खास आकर्षित थे। जाहिर है आगे चलकर वे कांग्रेस में शामिल हुए और कुछ ही दिनों में उसके अभिन्न अंग हो गए। दिसंबर 1929 में, कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। इसी अधिवेशन में एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें अंग्रेज हुकूमत से 'पूर्ण स्वराज्य' की मांग की गई। 26 जनवरी, 1930 को लाहौर में जवाहरलाल नेहरू ने स्वतंत्र भारत का झंडा फहराया। गांधी जी ने 1930 में 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' का आह्वान किया। आंदोलन कामयाब रहा और इसने ब्रिटिश सरकार को प्रमुख राजनीतिक सुधारों की आवश्यकता को स्वीकार करने के लिए मजबूर कर दिया। साल 1921 में नेहरू पहली बार जेल गए। अगले 24 सालों में उन्हें आठ बार बंदी बनाया गया। इस तरह से उन्होंने कुल मिलाकर नौ साल से ज्यादा समय जेलों में बिताया। जेलों में भी उनकी राजनीतिक गतिविधि थमी नहीं। जेल का ज्यादातर समय उन्होंने स्वाधीनता संग्राम की योजनाएं बनाने, पढ़ने और लिखने में व्यतीत किया।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के एकजुट प्रयास आखिरकार रंग लाए और 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ। पंडित जवाहरलाल नेहरू आजाद भारत के पहले प्रधानमंत्री बने। आजादी की पूर्व संध्या यानी 14 अगस्त की मध्यरात्रि को संसद में अपना महत्वपूर्ण भाषण देते हुए उन्होंने कहा, 'भारत की सेवा का अर्थ है, लाखों-करोड़ों पीड़ित लोगों की सेवा करना। इसका मतलब है गरीबी और अज्ञानता को मिटाना, बीमारियों और अवसर की असमानता को मिटाना। हमारी पीढ़ी के सबसे महान व्यक्ति की यही महत्वाकांक्षा रही है कि हर एक आंख से आंसू मिट जाएं। शायद ये हमारे लिए संभव न हो, पर जब तक लोगों कि आंखों में आंसू हैं और वे पीड़ित हैं तब तक हमारा काम खत्म नहीं होगा। और इसलिए हमें परिश्रम करना होगा, और कठिन परिश्रम करना होगा ताकि हम अपने सपनो को साकार कर सकें।' उनके इस भाषण में भविष्य की पूरी रूपरेखा दिखलाई देती है।

आजाद भारत में अब उनके सामने नई चुनौतियां थीं। अंग्रेजों ने तकरीबन 500 देशी रियासतों को एक साथ स्वतंत्र किया था और उस वक्त सबसे बडी चुनौती इन सब रियासतों को एक झंडे के नीचे लाना था। यह कठिन काम नेहरू ने लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के साथ मिलकर कूटनीति से सुलझाया। आगे चलकर उन्होंने भारत के पुनर्गठन के रास्ते में उभरी हर चुनौती का समझदारी से सामना किया। उनका एक और अहम फैसला, भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का था। इसके लिए उन्होंने साल 1956 में राज्य पुनर्गठन कानून पास किया। आजादी के बाद देश में राज्यों की सीमाओं में हुआ यह सबसे बड़ा बदलाव था। इसके तहत 14 राज्यों और छह केंद्र शासित प्रदेशों की स्थापना हुई। उनके कार्यकाल में संविधान में एक नया अनुच्छेद जोड़ा गया, जिसके तहत भाषाई अल्पसंख्यकों को अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने का महत्वपूर्ण अधिकार हासिल हुआ।

जवाहरलाल नेहरू ने आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उन्होंने योजना आयोग का गठन किया, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास को प्रोत्साहित किया और देश के संपूर्ण विकास के लिए पंचवर्षीय योजना की शुरुआत की। प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की नीतियां ही थीं, जिनकी वजह से देश में कृषि और उद्योग का एक नया दौर शुरू हुआ। उन्होंने देश में औद्योगीकरण को महत्व देते हुए भारी उद्योगों की स्थापना को भी प्रोत्साहन दिया। विज्ञान के विकास के लिए भारतीय विज्ञान कांग्रेस की स्थापना की। भारत के विभिन्न भागों में स्थापित वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के अनेक केंद्र उनकी दूरदर्शिता की ही वजह से मुमकिन हुए। नेहरू, समाजवादी विचारधारा से बेहद प्रभावित थे। समाजवादी विचारधारा का ही का प्रभाव था कि उन्होंने भारत मे लोकतांत्रिक समाजवाद की स्थापना का लक्ष्य रखा। लोकतंत्र, समाजवाद, एकता व धर्मनिरपेक्षता उनकी घरेलू नीति के चार ठोस स्तंभ थे। अपने आखिरी वक्त तक वे इन्हीं नीतियों पर कायम रहे।

भारत की विदेश नीति के विकास में भी जवाहरलाल नेहरू ने प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने देश को तत्कालीन विश्व की दो महान शक्तियों अमेरिका और सोवियत संघ का पिछलग्गू न बनकर, तटस्थता की नीति का पालन किया। निर्गुटता एवं पंचशील जैसे सिद्धान्तों का पालन कर विश्व बंधुत्व एवं विश्व शांति को प्रोत्साहन दिया। एशिया और अफ्रीका में उपनिवेशवाद के खात्मे के लिए उन्होंने जोसेफ टीटो और नासिर के साथ मिलकर एक निर्गुट आंदोलन को बढ़ावा दिया। कोरियाई युद्ध का अंत करने, स्वेज नहर विवाद सुलझाने और कांगो समझौते को मूर्तरूप देने जैसे अन्य अंतरराष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में भी वे मध्यस्थ की भूमिका में रहे।

■ जाहिद खान
(वरिष्ठ पत्रकार)

विचार

शिवसेना को ले डूबा पुत्रमोह!

महाराष्ट्र में राष्ट्रपति शासन का पूरा ठीकरा शिवसेना पर फोड़ा जा रहा है। बेटे आदित्य को सीएम बनाने के लिए उद्धव ने जिस तरह का पुत्रमोह दिखाया, उसने पार्टी को खासे नुकसान में डाल दिया है। शिवसेना की हालत अभी न माया मिली और न राम वाली हो गई है।

भाजपा ने महाराष्ट्र में अधिक सीटों पर चुनाव लड़कर साबित कर दिया था कि शिवसेना की धमक पहले जैसी नहीं रही। फिर नतीजे आए तो उसने शिवसेना से बड़े भाई का तमगा छीना और फिर सरकार बनाने का दावा किया। यह पूरा घटनाक्रम देखने और सुनने में भले ही कमतर लगे, मगर इसी को शिवसेना ने प्रतिष्ठा से जोड़ दिया और वर्ली सीट से पहली बार विधायक बने बेटे आदित्य ठाकरे को मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठे देखने की चाह ने शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे को सब कुछ करने पर मजबूर कर दिया। मातोश्री से बाहर निकलकर शरद पवार से मिलना हो या फिर धुर विरोधी कांग्रेस की अध्यक्ष सोनिया गांधी से दो-दो बार सरकार बनाने की मिन्नतें करना हो। यह सब उद्धव ने पुत्रमोह में किया। यह ऐसा मोह है, जिसके चलते बहुतों का राजपाट खत्म हो चुका है। इसी फेर में अब शिवसेना फंसी है। राजनीति में पुत्रमोह पालने वाले मुलायम और लालू प्रसाद यादव से बेहतर और कोई नहीं जानता कि उन्होंने अपने जीवन की कितनी बड़ी गलती की। दोनों पार्टियां आज कहां हैं, यह बताने की कोई जरूरत नहीं।

महाराष्ट्र में बवाल की शुरुआत तब हुई जब भाजपा इस बात को लेकर अड़ी कि पूरे 5 साल उनका ही उम्मीदवार यानी फडणवीस मुख्यमंत्री होंगे, जबकि शिवसेना 50-50 फॉर्मूले को अमल में लाने की जिद पर अड़ गई। यानी ढाई साल फडणवीस मुख्यमंत्री रहें और बाकी के ढाई साल आदित्य ठाकरे सीएम की कुर्सी पर बैठें। हालांकि, इस 50-50 फॉर्मूले के चक्कर में भाजपा पहले दो बार धोखा खा चुकी है, इसलिए अब इस फॉर्मूले पर भरोसा नहीं कर पा रही थी। वहीं दूसरी ओर शिवसेना अपनी जिद पर अड़ी थी। इस पूरे घटनाक्रम से यह तो साफ हो चुका था कि बाल ठाकरे के बाद शिवसेना की धमक तो पहले ही कम हो चुकी है अब पुत्रमोह में पड़ कर उद्धव ठाकरे शिवसेना का वजूद तक खोने को तैयार हैं। शिवसेना और भाजपा में हमेशा ही खटपट होती रहती है। पिछले पूरे कार्यकाल में सत्ता में सहयोगी होने के बावजूद शिवसेना भाजपा पर हमलावर ही रही। बावजूद इसके इस बार शिवसेना और भाजपा ने गठबंधन में चुनाव लड़ा। इसकी मुख्य वजह है विचारधारा। भाजपा और शिवसेना दोनों ही हिंदूवादी छवि के साथ राजनीति करते हैं।

अब अगर शिवसेना कांग्रेस-एनसीपी के गठबंधन के साथ सरकार बनाने के गुणा-भाग में लगी है तो तय है कि यह फैसला उसकी विचारधारा के खिलाफ जाएगा, जिसकी वजह से छवि को नुकसान पहुंचना तय है। अगर इस बार पांच साल के लिए (जो संभव नहीं है) शिवसेना ने ऐसा कर के सरकार बना ली और आदित्य ठाकरे को सीएम की कुर्सी पर बैठा भी दिया तो अगले चुनाव में खामियाजा भुगतना पड़ सकता है। इन सबका फायदा सिर्फ भाजपा को मिलने की संभावना अधिक है। शिवसेना का भविष्य क्या होगा यह वक्त बताएगा, लेकिन कई पार्टियों में पुत्रमोह की वजह से काफी कुछ बर्बाद हुआ है।

खलनायक बन ही गई शिवसेना

महाराष्ट्र में 24 को अक्टूबर को आए चुनाव परिणाम के 20 दिन बाद भी कोई दल या गठबंधन सरकार बनाने के लिए 145 के जादुई आंकड़े का जुगाड़ नहीं कर सका। राज्य में किसी की सरकार न बनती देख राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने आखिरकार राज्य में महाराष्ट्र शासन लागू करने के लिए केंद्र को सिफारिश पत्र भेज दिया। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के दस्तखत के साथ ही राज्य में अनुच्छेद 356 के तहत महाराष्ट्र शासन लागू हो गया। वर्ष 1960 में महाराष्ट्र के गठन के बाद यह तीसरा मौका है, जब राज्य में राष्ट्रपति शासन लगा है। राज्य में पहली बार 17 फरवरी 1980 को राष्ट्रपति शासन लागू हुआ था। तब तत्कालीन मुख्यमंत्री शरद पवार के पास विधानसभा में पूर्ण बहुमत था, इसके बावजूद उन्होंने सदन भंग कर दिया गया था। तब 17 फरवरी से आठ जून 1980 तक यानी 112 दिन राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू रहा था। राज्य में दूसरी बार 28 सितंबर 2014 को राष्ट्रपति शासन लागू हुआ था। उस समय राज्य में कांग्रेस के पृथ्वीराज चव्हाण मुख्यमंत्री थे। कांग्रेस ने सरकार में शामिल सहयोगी एनसीपी सहित अन्य सहयोगी दलों से किनारा कर लिया था, जिससे विधानसभा को समय से पहले भंग करना पड़ा था। उस वक्त 28 सितंबर से 30 अक्टूबर 2014 तक राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू हुआ था।

महाराष्ट्र की राजनीति में अपराजित रहते हुए पवार ने कुछ समय पहले ही 50 साल पूरे किए हैं। कहा जाता है कि पवार की सहमति के बिना महाराष्ट्र में पत्ता भी नहीं हिलता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण महाराष्ट्र में तीसरी बार लगा राष्ट्रपति शासन है। राज्य में तीनों बार लगे राष्ट्रपति शासन में पहली बार जहां स्वयं पवार शामिल रहे, वहीं दूसरी बार उनकी पार्टी और कांग्रेस के बीच पैदा हुए मतभेद के कारण राज्य में राष्ट्रपति शासन लगा। 12 नवंबर 2019 को लगे राष्ट्रपति शासन में भी पवार की भूमिका अहम है। खैर, अब जबकि महाराष्ट्र में राष्ट्रपति शासन लग गया है तो इसका मतलब है कि राज्य का नियंत्रण राष्ट्रपति करेंगे। हालांकि, राष्ट्रपति राज्यपाल को राज्य से संबंधित फैसले लेने का पूरा अधिकार देते हैं। संविधान में आर्टिकल 352, 356 और 365 में इसका प्रावधान भी है। अगर राष्ट्रपति को लगता है कि राज्य की सरकार ठीक तरह से काम नहीं कर रही है या फिर सरकार गठित नहीं हो पाती है तो राष्ट्रपति शासन लगाया जाता है। आर्टिकल 365 में प्रावधान है कि अगर राज्य सरकार केंद्र सरकार के संवैधानिक निर्देशों को नहीं मानती है तो भी राष्ट्रपति शासन लगाया जा सकता है। 352 में आर्थिक आपातकाल का जिक्र है। अगर

महाराष्ट्र के पूरे घटनाक्रम में शिवसेना ही खलनायक बनकर सामने आई है। उसे सत्ता तो नसीब नहीं हो पाई है और जनता की नजर से गई, वह अलग। हालात मध्यावधि चुनाव के नहीं हैं, आने वाले दिनों में सरकार का गठन हो जाएगा, पर अगर चुनाव हुए, तो शिवसेना क्या मुंह लेकर जनता के पास जाएगी। जनता शिवसेना के खिलाफ है, उसे खामियाजा भुगतना पड़ सकता है।

अब तक के राष्ट्रपति शासन का इतिहास देखें तो अलग-अलग राज्यों में 126 बार राष्ट्रपति शासन लग चुका है। इसमें सबसे ज्यादा मणिपुर में 10 बार, पंजाब में नौ बार, उत्तर प्रदेश में नौ बार, बिहार में आठ बार, कर्नाटक में 6 बार, पुडुचेरी में 6 बार, ओडिशा में छह बार, केरल में चार बार राष्ट्रपति शासन लगा। इसके अलावा गुजरात में पांच बार, गोवा में पांच, मध्य प्रदेश में चार, राजस्थान में चार, तमिलनाडु में चार, नगालैंड में चार, असम में चार, हरियाणा में तीन, झारखंड में तीन, त्रिपुरा में तीन, मिजोरम में तीन, आंध्रप्रदेश में तीन, महाराष्ट्र में तीन, अरुणाचल प्रदेश में दो बार, हिमाचल, मेघालय, सिक्किम, उत्तराखंड में दो बार और एक बार दिल्ली में राष्ट्रपति शासन लागू किया गया।

हालांकि, राज्य में सरकार गठन के लिए राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी पहल की थी। उन्होंने बारी-बारी से राज्य की तीनों बड़ी पार्टियों को सरकार बनाने का निमंत्रण दिया। सबसे बड़ी पार्टी भाजपा, शिवसेना और एनसीपी को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया, लेकिन कोई भी दल राज्यपाल द्वारा दी गई समय सीमा के भीतर बहुमत का पत्र उन्हें नहीं सौंप सका। जहां भाजपा ने बहुमत न होने की बात कहते हुए सरकार बनाने से इंकार कर दिया, तो वहीं शिवसेना और एनसीपी ने राज्यपाल से अतिरिक्त समय देने की गुहार लगाई, जिसे देने से राज्यपाल ने इंकार कर दिया। मंगलवार को दोपहर में एनसीपी द्वारा अतिरिक्त समय मांगने के बाद राज्यपाल ने राज्य में राष्ट्रपति शासन की सिफारिश केंद्र सरकार के पास कर दी। इस पूरे घटनाक्रम में किसे दोष दें और किसे बरी करें, यह किसी से छिपा नहीं है। महाराष्ट्र की सभी पार्टियों ने अपने स्वार्थ के लिए जिस तरह से राज्य में अस्थिरता पैदा की है, वह जनता के वोटों का सीधा-सीधा अपमान है। जनता सवाल कर रही है कि जब उसने एक गठबंधन को बहुमत दिया तो फिर सरकार क्यों नहीं। यह सवाल सिर्फ महाराष्ट्र की धरती पर ही नहीं पूरे देश में तैर रहा है। जो भी हो महाराष्ट्र में जो दिखा वह देश की जुगाड़ तंत्र वाली राजनीति का ताजा उदाहरण है। अगर इससे पार पाना है तो कुछ ऐसे कदम उठाने होंगे, जिससे चुनाव के बाद फिर जनता के वोटों का अपमान करने की हिम्मत कोई न दिखा सके। कायदे से होना यह चाहिए था कि भाजपा और शिवसेना दोनों जनादेश का सम्मान करते व सरकार बनाते। दोनों के बीच क्या मतभेद हैं, क्या समझौता हुआ है, इससे जनता को कोई लेना-देना नहीं। अगर होता तो शायद बहुमत लायक सीटें भी न देती। रही बात एनसीपी और कांग्रेस की तो उसे जनता ने विपक्ष में बैठने का जनादेश दिया था, तो उन्हें उसे स्वीकार कर पीछे हटना चाहिए था, मगर वे ऐसा नहीं कर पाए। वहीं एनसीपी अध्यक्ष शरद पवार मतगणना के बाद कहते रहे कि उन्हें विपक्ष में बैठने का जनादेश मिला है, मगर जैसे ही सत्ता की मलाई सामने दिखी, वे कांग्रेस संग शिवसेना के साथ जोड़तोड़ में लग गए। सत्ता की रेस भले ही अंजाम तक न पहुंच पाई हो, मगर राजनीति के मंझे हुए कई घोड़े बीच में ही धूल चाटते नजर आए और जनता के सामने अपने बदरंग हो चुके दामन को लाख चाहने के बावजूद छिपा तक नहीं पाए। एनसीपी, कांग्रेस और शिवसेना अब भले ही यह कहें कि वे महाराष्ट्र में स्थाई सरकार चाहते हैं और जनता को मध्यावधि चुनाव में नहीं झोंकना चाहते, इसीलिए सरकार बनाने की जोड़तोड़ कर रहे हैं, पर उनसे यह पूछा जाना चाहिए कि आखिर जोड़तोड़ की नौबत आई ही क्यों? भाजपा और शिवसेना के गठबंधन को जब स्पष्ट जनादेश मिला था, तो क्यों शिवसेना ने अपनी टांग फंसाई।

इसे पूरे घटनाक्रम में शिवसेना ही खलनायक बनकर सामने आई है। उसे अब सत्ता तो नसीब नहीं हो पाई है और जनता की नजर से गई, वह अलग। राजनीति में महत्वाकांक्षा आम है, मगर इसके एवज में सब कुछ दांव पर भी नहीं लगाया जा सकता। हालात मध्यावधि चुनाव के नहीं हैं, उम्मीद है कि आने वाले दिनों में सरकार का गठन हो जाएगा, पर अगर चुनाव हो गए, तो शिवसेना क्या मुंह लेकर जनता के पास जाएगी। पार्टी ने बाल ठाकरे के उस सिद्धांत के खिलाफ जाकर काम किया है, जो अब शायद महाराष्ट्र की जनता को भी पसंद न आए। वहां की जनता खुलकर शिवसेना के खिलाफ है, ऐसे में अगले चुनाव में उसे इसका खामियाजा भी भुगतना पड़ सकता है। शिवसेना के लिए राहत बस इतनी है कि वह एनपीसी-कांग्रेस के साथ सरकार बना ले और खुद को साबित करे।

■ ज्योति मांझी
(वरिष्ठ पत्रकार)

ट्विटर

राज्य में अस्थिरता के लिए भाजपा जिम्मेदार है। उसने गठबंधन धर्म का पालन नहीं किया और न ही दोनों पार्टियों के बीच समझौते को लागू करने में दिलचस्पी दिखाई।

एकनाथ शिंदे, शिवसेना नेता

शिवसेना को पहले दिन से पता था कि उसे सीएम बनने का जनादेश नहीं मिला है, फिर भी उसने जिद की और राज्य में अस्थिरता पैदा की। जनता बेवकूफ नहीं है।

संबित पात्रा, भाजपा प्रवक्ता

सत्यार्थ

बलि और भगवान बुद्ध

किसी राज्य में यज्ञ हेतु राजा एक बकरे की बलि चढ़ाने जा रहा था। उसी समय उधर से भगवान बुद्ध गुजर रहे थे। राजा को ऐसा करते देख वह उससे बोले-ठहरो, राजन! यह क्या कर रहे हो? इस बेजुबान बकरे की भेंट क्यों चढ़ा रहे हो, आखिर किसलिए? राजा ने कहा- इसकी बलि चढ़ाने से मुझे बहुत पुण्य प्राप्त होगा एवं यह हमारी प्रथा भी है। राजा की इस बात पर बुद्ध ने कहा- यदि ऐसी बात है तो मुझे भेंट चढ़ा दो। तुम्हें और ज्यादा पुण्य मिलेगा। बकरे के मुकाबले एक इंसान की बलि से तुम्हारे

भगवान भी खुश होंगे। यह सुनकर राजा जरा सा डरा। कोई इंसान बकरे का पक्ष लेगा, यह तो राजा ने सोचा तक नहीं था, मगर बुद्ध की बलि चढ़ाने की बात मन में आते ही वह कांप गया। उसने कहा- अरे, नहीं महाराज! आप ऐसी बात न करें। इस बारे में तो मैं सोच भी नहीं सकता। बकरे की बात अलग है। इससे किसी का नुकसान भी तो नहीं। बकरे का भी फायदा ही है। वह सीधा स्वर्ग चला जाएगा। बुद्ध बोले- यह तो बहुत ही अच्छा है। मैं स्वर्ग की तलाश कर रहा हूं। तुम मुझे बलि चढ़ा दो और स्वर्ग भेज दो या फिर ऐसा क्यों नहीं करते कि तुम अपने माता-पिता को ही स्वर्ग भेज दो और खुद को ही क्यों रोके हुए हो। जब स्वर्ग जाने की ऐसी सरल व सुगम तरकीब मिल गई है, तब काट लो गर्दन। इस बेचारे बेजुबान बकरे को क्यों जबरन स्वर्ग में भेज रहे हो। यह शायद स्वर्ग जाना भी न चाहता होगा। बकरे को खुद ही चुनने दो कि उसे कहां जाना है। बुद्ध के सामने राजा के तर्कों की पोल खुल चुकी थी। वह महात्मा बुद्ध के चरणों में झुककर बोला- महाराज आपने मेरी आंखों पर पड़े अज्ञान के परदे को हटाकर मेरा जो उपकार किया है, वह मैं भूल नहीं सकता।

■ आरडी अग्रवाल

पृष्ठ 1 का शेष

प्रशांत किशोर शायद भूल गए...

इस 'गेम' से वर्ष 2024 के चुनाव में नीतीश कुमार की महत्वाकांक्षा को बल मिलेगा। लेकिन किशोर शायद भूल गए कि वो जिस राजनीति के कॉलेज के छात्र हैं, अमित शाह उस कॉलेज के प्रिंसिपल हैं। बीजेपी ने शिवसेना के अड़ियल रवैये से तंग आकर खुद को सीएम पद और सरकार बनाने की रेस से ही अलग कर लिया। फिर मातोश्री के दरवाजे पर नेताओं को बुलाने वाले शिवसेना प्रमुख को होटल-होटल जाकर समर्थन जुटाने की कवायद से दो-चार होना पड़ा। वहीं बीजेपी भी महाराष्ट्र के इस हालात के लिए पीके को ही जिम्मेदार ठहरा रही है। भाजपा नेता प्रीति गांधी ने एनडीए गठबंधन से शिवसेना के अलग होने के लिए प्रशांत किशोर को जिम्मेदार ठहराते हुए ट्वीट किया कि प्रशांत किशोर ले डूबा! वहीं जदयू नेता अजय आलोक ने भी प्रशांत किशोर पर तंज कसते हुए ट्वीटर पर लिखा है कि 'एक हैं मास्टर स्ट्रेटेजिस्ट। पिछले कुछ दिनों से शिवसेना उनसे ज्ञान ले रही थी। नतीजा सब देख रहे हैं। अब महामहिम ने और समय नहीं दिया। लगता है इस पहलू पर मास्टर साहब ने ध्यान नहीं दिया होगा। नतीजा न तीन में न तेरह में। कहते हैं न ग़फ़लत में सब गए, माया मिली न राम। जय मातर साब।' इसमें कोई शक नहीं कि प्रशांत किशोर की कामयाबी ने भारतीय राजनीति में नए प्रयोग के कई रास्ते खोले हैं। जिस तरह पहले नरेंद्र मोदी और फिर नीतीश कुमार के बाद तमाम दलों ने अपने चुनावी कैंपेन के लिए गैर राजनीतिक लोगों की सलाह और मदद ली इससे अन्य नेता भी प्रभावित होते दिख रहे हैं। लेकिन राजनीति में सफलता और असफलता परिणामों से तय होते हैं। इस विधानसभा चुनाव में पिछली बारे के मुकाबले शिवसेना की सीटें भी कम हुईं। भले ही बीजेपी-शिवसेना गठबंधन को पूर्ण बहुमत मिल गया था, लेकिन शिवसेना की महत्वाकांक्षी राजनीति के चलते दोनों दलों का गठबंधन टूट गया। यहां तक कि शिवसेना ने एनडीए से बाहर आने का ऐलान कर दिया। मोदी सरकार में उसके एकमात्र मंत्री अरविंद सावंत ने इस्तीफा दे दिया है। नतीजतन सीएम की कुर्सी पर तो संशय है ही केंद्र में पद भी गंवा दिया जिसके बाद 'चौबे जी गए थे छब्बे जी बनने'। दुबे जी बनकर रह गए कहावत शिवसेना पर सटीक बैठती है।

यदि मंगल पर्वत चंद्र पर्वत से दबा हो तो उसके परिणाम दूसरे मिलते हैं। इस स्थिति में यदि व्यक्ति को सफलता नहीं मिले तो वह चिड़चिड़ा होने लगता है। उसका व्यवहार बदल जाता है। इस पर्वत पर यदि कोई भी अशुभ चिह्न हो तो व्यक्ति को आर्थिक मुसीबतों के साथ-साथ पारिवारिक दिक्कतें भी झेलनी पड़ती हैं। इसके उसकी वाणी प्रभावित होती है। नकारात्मक मंगल वाले व्यक्ति अन्य सभी से अधिक चलायमान दिमाग वाले होते हैं, इस वजह से किसी व्यवसाय में उनके अधिक दिनों तक टिके रहने की उम्मीद कम ही होती है। यदि साथ में एक अच्छी मस्तक रेखा हो तो संसार में ऐसा कोई परिश्रम नहीं है, जिस काम में वह सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं। ऐसे लोग अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं।

सफलता नहीं मिले तो चिड़चिड़ापन ला देती है यह रेखा

क्रॉस का निशान होने पर हमेशा रहता सिरदर्द और थकान

इसके अतिरिक्त मंगल पर्वत पर कोई क्रॉस का निशान या द्वीप होना जातक को सिरदर्द, थकान, गुस्सा जैसी समस्याएं देता है। इससे जातक का स्वास्थ्य प्रभावित होता है। हस्तरेखा विज्ञान के अनुसार यदि यह पर्वत अविकसित हो तो जातक के अवसाद का मरीज होने की आशंका बनी रहती है। ऊपर का मंगल यदि बुध पर्वत की ओर खिसका हो तो जातक का स्वभाव उग्र हो जाता है। वह हमेशा अपने को एक कुशल योद्धा समझता है। इसके कारण जातक के शरीर में चोट लग सकती है अथवा चीरफाड़ हो सकती है। ऐसे शख्स का अत्याधिक मात्रा में रक्त भी बह सकता है। मंगल पर्वत से निकलकर कोई रेखा यदि जीवनरेखा तक आए तो वह रेखा को जीवन रेखा जहां काट रही हो, उस समय तथा उम्र में किसी दुर्घटना अथवा लड़ाई में अपने शरीर का कोई अंग भी गंवा सकता है। ऐसे में जातक को इससे बचाव करने के उपाय करना चाहिए।

शत्रुओं से नहीं घबराते ऐसे लोग, पाते हैं विजय

हस्तरेखा विज्ञान में मंगल पर्वत के दो स्थान होते हैं। इससे समझा जा सकता है कि मंगल कितना शक्तिशाली और प्रमुख पर्वत है। मंगल पर्वत को हथेली में दो स्थानों पर माना जाता है-एक ऊपर और दूसरा नीचे। एक उच्च का पर्वत होता है और दूसरा नीच का होता है। उच्च मंगल पर्वत हृदय रेखा जहां से शुरू होती उसके ऊपर स्थित होता है जबकि नीच का मंगल जहां से जीवन रेखा शुरू होती है, वहां से कुछ ऊपर होता है। ऊपर के मंगल का ज्यादा उन्नत और उभरा होना व्यक्ति में आक्रामकता एवं साहस को बढ़ावा देता है, क्योंकि वह सेनापति हैं। ऐसे जातक स्वभाव से जुझारू होते हैं तथा विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत से काम लेते हैं। सफलता प्राप्त करने के लिए बार-बार प्रयत्न करते रहते हैं और अपने रास्ते में आने वाली बाधाओं तथा मुश्किलों के कारण आसानी से विचलित नहीं होते। इस स्थान पर किसी वृत, दाग या तिल का होना इसे और ज्यादा पुष्ट करता है।

बुरे वक्त में विचलित नहीं होते उच्च मंगल पर्वत वाले लोग

बुरा वक्त अच्छे से अच्छे व्यक्ति को परेशान कर देता है। इससे व्यक्ति पूरी तरह से परेशान हो जाता है, लेकिन आपने देखा होगा कि तमाम व्यक्ति बुरे वक्त में भी विचलित नहीं होते हैं। हस्तरेखा विज्ञान के अनुसार जिन लोगों की हथेलियों में उच्च का मंगल पर्वत होता है, वह बुरे वक्त में भी धैर्य नहीं खोते हैं।

पूर्व जन्म में गरीब ब्राह्मण थे धन के देवता कुबेर

धन-दौलत की चाह रखने वाले हमेशा धन की देवी लक्ष्मी की पूजा-अर्चना करते हैं। माता लक्ष्मी की पूजा धन की देवी के रूप में होती है तो धन के देवता के रूप में पूजे जाते हैं कुबेर देव। कुबेर धन के देवता कहे जाते हैं, लेकिन उनके कुबेर बनने की कहानी शायद हर कोई नहीं जानता है। तो आइए हम जानते हैं कि कुबेर देव असल में कौन थे और किसकी कृपा दृष्टि से वो धन के देवता कहलाए।

एक पौराणिक कथा के अनुसार अपने पूर्व जन्म में कुबेर देव गुणनिधि नाम के गरीब ब्राह्मण थे। बचपन में उन्होंने अपने पिता से धर्म शास्त्रों की शिक्षा ली, लेकिन धीरे-धीरे गलत संगत में आने से उन्हें जुआ खेलने और चोरी करने की लत लग गई।

पिता ने घर से निकाला

गुणनिधि की इन हरकतों से परेशान होकर पिता ने उन्हें घर से बाहर निकाल दिया। घर से निकाले जाने के बाद गुणनिधि की हालत दयनीय हो गई और वो लोगों के घर जा-जाकर भोजन मांगने लगे।

भोजन की तलाश में जंगल पहुंचे

एक दिन गुणनिधि भोजन की तलाश में गांव-गांव भटक रहे थे, लेकिन उस दिन उन्हें किसी ने भोजन नहीं दिया, जिसके बाद भूख और प्यास से परेशान गुणनिधि, भटकते-भटकते जंगल की ओर निकल पड़े। तभी उन्हें कुछ ब्राह्मण अपने साथ भोग की सामग्री लेकर जाते हुए दिखाई दिए। भोग की सामग्री को देख गुणनिधि की भूख बढ़ गई और खाने की लालच में वो ब्राह्मणों के पीछे-पीछे चल दिए।

चलते-चलते शिवालय पहुंच गए

ब्राह्मणों का पीछा करते-करते गुणनिधि एक शिवालय जा पहुंचे। जहां उन्होंने देखा कि मंदिर में ब्राह्मण भगवान शिव की पूजा कर रहे थे और भगवान शिव को भोग अर्पित कर सभी ब्राह्मण भजन-कीर्तन में मग्न हो गए।

मंदिर में भोग चुराते पकड़े गए

गुणनिधि शिवालय में भोजन चुराने की ताक में बैठे हुए थे। उन्हें भोजन चुराने का मौका रात में तब मिला, जब भजन-कीर्तन समाप्त कर सभी ब्राह्मण सो गए। गुणनिधि दबे पांव भगवान शिव की प्रतिमा के पास पहुंचे और वहां से भोग के रूप में रखा प्रसाद चुराकर भागने लगे, लेकिन भागते समय एक ब्राह्मण ने उन्हें देख लिया और चोर-चोर चिल्लाने लगा। गुणनिधि जान बचाकर वहां से भाग निकले, लेकिन नगर के रक्षक का निशाना बन गए और वहीं उनकी मृत्यु हो गई।

अंजाने में सफल हुआ महाशिवरात्रि का व्रत

भोग चोरी करके भागते वक्त गुणनिधि की मौत हो गई, लेकिन अंजाने में उनसे महाशिवरात्रि के व्रत का पालन हो गया तथा वो उस व्रत से प्राप्त होने वाले शुभ फल के हकदार बन गए। अंजाने में महाशिवरात्रि के व्रत का पालन हो जाने की वजह से गुणनिधि अपने अगले जन्म में कलिंग देश के राजा बने। अपने इस जन्म में गुणनिधि भगवान शिव के परमभक्त हुए।

शिव की कृपा से बने धन के देवता

वे सदैव भगवान शिव की भक्ति में खोए रहते थे। उनकी इस कठिन तपस्या और भक्ति को देखकर भगवान शिव उन पर प्रसन्न हुए। भगवान शिव ने वरदान देते हुए उन्हें यक्षों का स्वामी तथा देवताओं का कोषाध्यक्ष बना दिया। कहते हैं भगवान शिव जिस पर प्रसन्न हो जाते हैं उनकी सभी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। यह भगवान शिव की ही एक माया थी, जिससे गरीब ब्राह्मण गुणनिधि धन के देवता कुबेर कहलाए और संसार में पूजनीय हुए।

नमस्कार सदियों से हमारी जीवन शैली से जुड़ा हुआ है, जिसे हम आज की स्थिति में कम इस्तेमाल करने लगे हैं। पश्चिमी देशो की संस्कृति को हम इस कदर आंख बंद करते हुए अपनाते जा रहे हैं कि हम अपनी संस्कृति के वास्तविक मायने ही भूलते जा रहे हैं। एक-दूसरे के हाथ में हाथ मिलाकर हेलो-हाय बोलने से काफी बेहतर नमस्कार करना होता है। नमस्कार के पीछे कोई रुढ़िवादी सोच नहीं है। इसके पीछे वैज्ञानिक दृष्टि है, जिसे समझ कर इसे अपने जीवन में सभी लोगों को अपनाना चाहिए।

नमस्कार करने का तरीका

- आराम से सीधे खड़े रहो, दोनों हाथों के पंजे छाती के पास लाकर हाथों के पंजों को मिला दो, ये हाथों के पंजे थोडा टेढ़ा रखते हुए छाती के पास हो। उंगलियों से उंगलिया मिलना चाहिए।
- नमस्कार करते वक्त हाथों में कुछ सामान नहीं पकड़ना चाहिए। मन में कोई भी दूर भाव नहीं लाना चाहिए। नमस्कार करते वक्त शरीर को न तो सख्त रखे न ही पूरा ढीला। भगवान हो चाहे अच्छा बुरा इंसान को नमस्कार, करते वक्त गुस्सा नहीं करना चाहिए। नमस्कार करते वक्त शरीर को हिलाना नहीं चाहिए और पैरो को बहुत दूर भी नहीं रखना चाहिए।
- जब आप भगवान को नमस्कार करें तो सिर को हल्का झुकाते हुए आखों को बंद करें, फिर छाती के पास मिले हुए हाथों के पंजों के पास सिर ले जाकर बाहर निकले अंगूठे से लगा दो, यह करने पर भगवान से मिली हुई शक्ति आपने शरीर और मस्तिष्क में तुरंत संचारित हो जाती है।
- लोगों को नमस्कार करते वक्त उनकी आंखों में देखते हुए थोड़ा सिर केवल आपको झुकाना है, इससे सकारात्मक शक्ति का आदान प्रदान होता है।

नमस्कार करते समय क्या करें?

- पहले जमाने में नमस्कार करते वक्त पैर में चप्पल नहीं पहनी जाती थी। चाहे वो नमस्कार भगवान को हो या लोगों को किया नमस्ते हो, लेकिन अब ऐसी शूज और सैंडल के हम आदि हो गए है कि उनको निकालने और पहनने में काफी वक्त चला जाता है। इसलिए नमस्कार करते वक्त सभी लोग जूते उतारना भूलने लगे हैं।
- किंतु भगवान को नमस्कार करते वक्त आपको जूते नहीं पहनना चाहिए। पैर में जूते और चप्पल हो तो नमस्कार करने पर मिलने वाली वो चेतना और सही शक्ति नहीं मिल पाती है।

आम-सेब नहीं ये फल है अमर

आंवले का फल पौराणिक दृष्टिकोण से रत्नों के समान मूल्यवान माना जाता है। कहते है कि शंकराचार्य ने इसी फल को स्वर्ण में परिवर्तित कर दिया था। इस फल का प्रयोग कार्तिक मास से आरंभ करना अनुकूल माना जाता है। इस फल के सटीक प्रयोग से आयु, सौंदर्य और अच्छे स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। मात्र यही ऐसा फल है जो सामान्यतः नुकसान नहीं करता। इस फल को नौजवानी का फल भी कहते हैं, इसे ग्रहण करने से बुढ़ापा नहीं आता।

आंवले का वैज्ञानिक महत्व क्या है?

- इसके फल में विटामिन सी भरपूर मात्रा में पाया जाता है।
- अतः यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ा देता है।
- इसके नियमित सेवन से सामान्यतः रोग नहीं होते, सर्दी जुकाम तक नहीं होते।
- बाल लंबे और घने होते हैं, त्वचा चमकदार और सुंदर हो जाती है।
- आंवले के रस को शहद के साथ लेने से रक्त संबंधी समस्या दूर होती है। हृदय रोग से छुटकारा मिलता है।

क्या है आंवले के फल का विशेष प्रयोग

- अगर धन का अभाव हो तो हर बुधवार को भगवान को आंवला अर्पित करें।
- अगर उत्तम स्वास्थ्य चाहिए तो कार्तिक माह में आंवले के रस का नियमित प्रयोग करें।
- आंवले के वृक्ष के नीचे शयन, विश्राम और भोजन करने गोपनीय से गोपनीय बीमारियां और चिंताएं दूर हो जाती हैं।
- आंवले के फल को दान देने से मानसिक चिंताएं दूर होती हैं।
- आंवले का चूर्ण खाने से वृद्धावास्था का प्रकोप नहीं होता।

माथे की लकीरों का किस्मत से है कनेक्शन, बताती हैं भाग्य

अक्सर आपने माथे की लकीरों को भाग्य से जोड़ने वाली बातें सुनी होंगी। लोगों को कहना है कि माथे की इन रेखाओं में ही इंसान का भाग्य कैद होता है, लेकिन क्या आप जानते हैं माथे की सभी लकीरों का अलग-अलग महत्व होता है, आइए जानते हैं इसके बारे में...

धन से जुड़ी पहली लकीर

- माथे की पहली लकीर जो भौहों के काफी निकट होती है, धन की लकीर होती है।
- ये लकीर जितनी साफ और स्पष्ट होगी, उतनी ही अच्छी आर्थिक दशा होगी।
- इस लकीर का टूटा होना या छोटा होना बार-बार आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव दिखाता है।

सेहत से जुड़ी दूसरी लकीर

- भौहों के निकट की लकीर के बाद दूसरी लकीर, स्वास्थ्य की लकीर होती है।

- ये लकीर गाढ़ी और साफ होने से व्यक्ति स्वस्थ होता है, पतली और हल्की होने से बीमार रहता है।
- इस लकीर का टूटा होना या ऊपर-नीचे होना लंबे समय तक चलने वाली बीमारी का संकेत देता है।

भाग्य से जुड़ी तीसरी लकीर

- नीचे से पाई जाने वाली तीसरी लकीर भाग्य की होती है और कम लोगों के माथे पर पाई जाती है।
- छोटी ही सही अगर ये माथे पर हो तो व्यक्ति भाग्यवान होता है।
- एक साथ तीन सीधी लकीरों का माथे पर होना व्यक्ति को भाग्यवान बनाता है।

उतार-चढ़ाव से जुड़ी चौथी लकीर

- ये लकीर भी माथे पर कम होती है, पर अगर होती है तो जीवन में काफी उतार-चढ़ाव आते हैं।
- आयु के 26 से 40 वे वर्ष तक उतार-चढ़ाव और संघर्ष के बाद ऐसे लोग खूब सफल होते हैं।
- आमतौर पर ऐसे लोग उम्र के 40 वर्ष के बाद खूब सफलता पाते हैं और एक से अधिक संपत्ति भी बना लेते हैं।

क्यों खतरनाक है पांचवी लकीर?

- आम तौर पर पांचवी लकीर का होना माथे में ढेर सारी लकीरों का होना दिखाता है।
- इस तरह की ढेर सारी लकीरें व्यक्ति को चिंतित रखती हैं, कितनी भी सफलता और संपन्नता क्यों न हो, व्यक्ति को किसी न किसी कारण चिंता बनी रहती है।

- ऐसे लोग कभी-कभी सब कुछ त्याग कर वैराग्य की ओर चले जाते हैं।

क्या है छठी लकीर का मतलब?

- नाक की सीध में ऊपर जाने वाली सीधी लकीर, दैवीय लकीर होती है।
- ऐसी लकीर यह दर्शाती है कि व्यक्ति पूर्व जन्म के शुभ संस्कारों से बंधा हुआ है और इसके ऊपर दैवीय कृपा है।
- आम तौर पर ऐसी लकीर वाले लोग अचानक आश्चर्यजनक रूप से उन्नति कर जाते हैं।

Printed, Published & Owner by ATUL SHARMA & Printed at SARANGLE PRINTERS, BASTI GUZAN JALANDHAR (PUNJAB) and Published from ATUL SHARMA, NN-453 GOPAL NAGAR JALANDHAR (PUNJAB)
Editor: ATUL SHARMA*
*Responsible for selection of News under the PRB ACT. PUNHIN/2019/77863, All Rights Reserved. Reproduction in whole or in part without permission is prohibited. All disputes shall be settled at Jalandhar jurisdiction only.

राफेल पर आये फैसले पर बोले राजनाथ, प्रधानमंत्री मोदी की छवि बिगाड़ने के लिए लगाये थे आरोप, माफी मांगे कांग्रेस

■ तवांग/न्यूज नेटवर्क

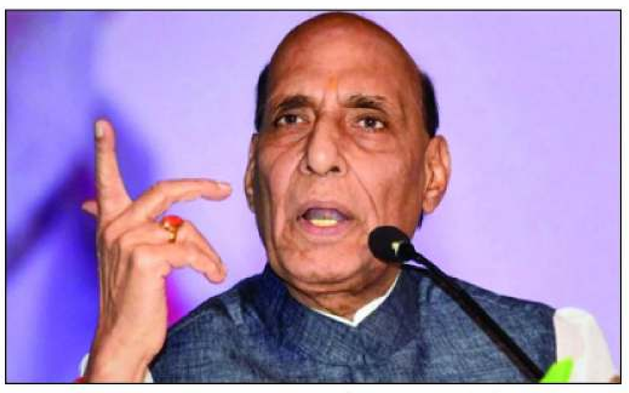

राफेल मामले में उच्चतम न्यायालय द्वारा पुनर्विचार याचिकाओं को खारिज किये जाने के बाद कांग्रेस पर निशाना साधते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बृहस्पतिवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की छवि खराब करने के लिए भ्रष्टाचार के आरोप लगाये गये और इसके लिए कांग्रेस को माफी मांगनी चाहिए। उच्चतम न्यायालय ने बृहस्पतिवार को राफेल लड़ाकू विमान सौदे के मामले में नरेंद्र मोदी सरकार को क्लीनचिट दे दी। शीर्ष अदालत ने 14 दिसंबर, 2018 के फैसले पर पुनर्विचार की मांग वाली याचिकाओं को खारिज कर दिया जिसमें कहा गया था कि 36 राफेल लड़ाकू विमानों की खरीद में निर्णय लेने की प्रक्रिया में संदेह का कोई कारण नहीं है। अरुणाचल प्रदेश के तवांग में मैत्री दिवस समारोह में शामिल होते हुए सिंह ने कहा, ''राफेल सौदे में भ्रष्टाचार के आरोप केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार की साफ-सुथरी और ईमानदार छवि को खराब करने की कोशिश है।

भारत की जनता कांग्रेस के निंदा अभियान तथा आक्षेपों के लिए उन्हें माफ नहीं करेगी। कांग्रेस को लोगों को गुमराह करने के लिए माफी मांगनी चाहिए।'' तवांग के ग्वालवा सांगयांग ग्यात्सो हाई आल्टीट्यूड स्टेडियम में दो दिन तक मैत्री दिवस मनाया जाएगा।

रक्षा मंत्री ने कहा, ''कुछ राजनीतिक दलों और उनके नेताओं द्वारा राफेल विमान खरीद सौदे में लगाये गये आरोप अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण, अवांछित और दुर्भावना से भरे थे। शीर्ष अदालत के फैसले ने अंतत: ऐसे नेताओं को उल्टे सीधे आरोप लगाते समय सावधानी बरतने के लिए चेताया है।''

सिंह ने कहा कि राफेल विमानों को पूरी तरह पारदर्शी तरीके से खरीदा गया और इसमें भारत की रक्षा संबंधी तैयारियों को उन्नत करने की तत्काल आवश्यकता को ध्यान में रखा गया। उन्होंने कहा, ''रक्षा तैयारियों और राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर कभी राजनीति नहीं होनी चाहिए।

मैं राफेल मामले में पुनर्विचार याचिकाओं को स्पष्ट तौर पर खारिज करने के उच्चतम न्यायालय के फैसले का तहेदिल से स्वागत करता हूं और इस फैसले के साथ ही राजग सरकार का रुख साबित हो जाता है। शीर्ष अदालत का फैसला निर्णय लेने में हमारी सरकार की पारदर्शिता पर भी फैसला है।''

मुशर्रफ का वीडियो वायरल, आतंकवादियों को पाकिस्तान में प्रशिक्षित करने की बात कबूल की

इस्लामाबाद/न्यूज नेटवर्क

पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ का 2015 का एक वीडियो वायरल हुआ है जिसमें उन्होंने स्वीकार किया है कि जम्मू-कश्मीर में भारतीय सेना से लड़ने के लिए मुजाहिदीनों के रूप में कश्मीरियों को उनके देश में प्रशिक्षित किया गया था। इस वीडियो को एक बार फिर आनलाइन प्रसारित किया गया है। क्रेटा से हामिद मंडोखेल ने एक मिनट 45 सेकंड का वीडियो मंगलवार को ट्विटर पर पोस्ट किया था। वीडियो यह दिखाने के लिए पोस्ट किया गया है कि आतंकवाद संबंधी पाकिस्तान की नीति ने पाकिस्तान में पश्तूनों को बर्बाद कर दिया। पूर्व राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी के प्रेस सचिव रहे फरहतुल्लाह बाबर ने बाद में वीडियो को री-ट्वीट किया। बाबर के वीडियो को फिर से ट्वीट करने के बाद कई अन्य लोगों ने इसे साझा किया और इस पर टिप्पणी की। वीडियो में, मुशर्रफ ने कहा कि पाकिस्तान आए कश्मीरियों का यहां नायक की तरहस्वागत किया गया। हम उन्हें प्रशिक्षित करते थे और उनका समर्थन करते थे। हम उन्हें मुजाहिदीन मानते थे जो भारतीय सेना के साथ लड़ेंगे। फिर, लश्कर-ए-तैयबा जैसे विभिन्न आतंकवादी संगठन बने। वे (जिहादी आतंकवादी) हमारे नायक थे।उन्होंने कहा कि पाकिस्तान ने 1979 में अफगानिस्तान में धार्मिक उग्रवाद की शुरुआत की ताकि इसका लाभ उठाया जा सके और सोवियत संघ के सैनिकों को देश से बाहर कर दिया जाए। मुशर्रफ ने कहा, ''हम दुनिया भर से मुजाहिदीनों को लाए, हमने उन्हें प्रशिक्षित किया और उन्हें हथियार दिए। हमने तालिबान को प्रशिक्षित किया, उन्हें भेजा। वे हमारे नायक थे। हक्कानी हमारे नायक थे। ओसामा बिन लादेन हमारे नायक थे। अयमान अल-जवाहिरी था। हमारे नायक। उसके बाद वैश्विक वातावरण बदल गया। दुनिया चीजों को अलग तरह से देखने लगी। हमारे नायकखलनायक में बदल गए।'' मुशर्रफ का जो वीडियो वायरल हुआ है वह 2015 में दुनिया न्यूज द्वारा लिए गए एक साक्षात्कार का हिस्सा है। मुशर्रफ को 2007 में संविधान को स्थगित करने के लिए पाकिस्तान में राजद्रोह के आरोपों का सामना करना पड़ रहा है। अभी वह दुबई में स्व-निर्वासन में रह रहे हैं।

ममता ने साधा निशाना, कहा- संवैधानिक पदों पर बैठे कुछ लोग भाजपा के मुखपत्र की तरह कर रहे काम

■ कोलकाता/न्यूज नेटवर्क

महाराष्ट्र में विधानसभा चुनावों के बाद राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी पर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन की अनुशंसा करने के लिए निशाना साधते हुए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने गुरुवार को कहा कि संवैधानिक पदों पर बैठे कुछ लोग भाजपा के मुखपत्र की तरह काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि ये लोग कुछ राज्यों में समानांतर प्रशासन चलाना चाहते हैं। बनर्जी ने कहा कि कुछ नामित व्यक्ति अपने कार्यक्षेत्र के दायरे से आगे निकल कर कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा, उन्हें केंद्र सरकार की जगह नहीं लेनी चाहिए। केंद्र को निश्चित रूप से इसका ध्यान रखना चाहिए। बनर्जी ने कहा, आम तौर पर मैं संवैधानिक पदों पर टिप्पणी नहीं करती लेकिन कुछेक लोग (राज्यपाल) भाजपा के मुखपत्र की तरह काम कर रहे हैं। मेरे राज्य में भी, आप देख रहे हैं कि क्या हो रहा है - वे एक समानांतर प्रशासन चलाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य सरकारें लोगों द्वारा चुनी जाती हैं और संघीय ढांचे को संविधान के मुताबिक काम करना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा, उन्हें (सरकारों को) काम करने दिया जाना चाहिए। महाराष्ट्र में मंगलवार को राष्ट्रपति शासन लगाया गया था। इससे पहले कोश्यारी ने केंद्र सरकार को भेजी रिपोर्ट में कहा था कि स्थिर सरकार का गठन मौजूदा स्थिति में असंभव है। इसे लेकर गैर-भाजपाई दलों ने आपत्ति जताई थी।

वोटर सूचियों के विशेष समीक्षा प्रोग्राम की तारीखों में वृद्धि

■ चंडीगढ़/न्यूज नेटवर्क

भारतीय चुनाव आयोग ने पंजाब राज्य में चल रहे फोटो वोटर सूचियों के विशेष संशोधन प्रोग्रामों की तारीखों में वृद्धि की गई है। इस सम्बन्धी जानकारी देते हुए कार्यालय मुख्य चुनाव अधिकारी पंजाब के एक प्रवक्ता ने बताया कि वोटर पहचान प्रोग्राम और अन्य पहली गतिविधियां जिनमें पोलिंग स्टेशनों की रैशनलाईजेशन की तारीख़ को बढ़ाकर 30 नवंबर, 2019 कर दी गई है जबकि वोटर सूची 04.02.2020 को प्राथमिक तौर पर प्रकाशित कर दी जाएगी। त्रुटियों और ऐतराज़ तारीख़ 16.12.2019 से 15.1.2020 तक लिए जाएंगे। त्रुटियों और ऐतराज़ सम्बन्धी प्राप्त आवेदनों का निपटारा 27 जनवरी 2020 तक किया जायेगा।

श्री गुरु नानक देव जी के 550वें प्रकाश पर्व के मौके पर राज्य के लोगों के लिए यह एक बेशकीमती तोहफा- स. बलबीर सिंह सिद्धू

■ चंडीगढ़/न्यूज नेटवर्क

विभिन्न बीमारियों के इलाज और कुदरती ढंग से सेहतमंद जीवन जीने को उत्साहित करने के उद्देश्य से स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री स. बलबीर सिंह सिद्धू और संसद मैंबर श्रीमती परनीत कौर द्वारा आज मोहाली जिले के गाँव दियालपुरा में पंजाब राज्य के पहले आयुष अस्पताल का नींव पत्थर रखा गया। दियालपुरा में नींव पत्थर समागम के दौरान बोलते हुए स. बलबीर सिंह सिद्धू ने बताया कि राज्य में अपनी तरह का पहला आयुष अस्पताल 9 एकड़ जमीन पर बनाया जायेगा जो कि इसी गाँव के ही एक परिवार द्वारा दान दी गई है। उन्होंने बताया कि 50 बिस्तरों के सामर्थ्य वाला यह अस्पताल आयुर्वेद, योगा, युनानी, सिद्ध और होम्योपैथी मैडीकल प्रणालियों के अधीन चैकअप और इलाज सेवाएं मुहैया करवाएगा जिसका निर्माण 1 साल के अंदर मुकम्मल कर लिया जायेगा। इस प्रोजैक्ट का अनुमानित बजट 7 करोड़ रुपए है। श्री गुरु नानक देव जी के 550वें प्रकाश पर्व के मौके पर राज्य के लोगों के लिए यह एक बेशकीमती तोहफा है। स. सिद्धू ने कहा कि यह अस्पताल बनने के बाद लोगों को प्राकृतिक चिकित्सा के लिए दक्षिणी राज्यों की तरफ नहीं जाना पड़ेगा। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि पंजाब सरकार कैप्टन अमरिन्दर सिंह के योग्य नेतृत्व अधीन राज्य के स्वास्थ्य क्षेत्र को प्राथमिकता दे रही है और सरकारी स्वास्थ्य संस्थाओं के संपूर्ण कायाकल्प की प्रक्रिया जारी है। इस क्षेत्र के लोगों की लंबे समय से की जा रही माँग को स्वीकृत करते हुए स. बलबीर सिंह सिद्धू ने ऐलान किया कि जीरकपुर के नज़दीक ढकोली के कम्युनिटी हैल्थ सैंटर को जल्द ही 50 बिस्तरों के

आयुष अस्पताल वरदान साबित होगा- परनीत कौर

सामर्थ्य वाले सब-डिविज़नल अस्पताल के तौर पर अपग्रेड किया जायेगा जिससे एमरजैंसी सेवाओं के साथ-साथ स्पैशलिस्ट डॉक्टरों की सेवाओं की 24 घंटे उपलब्धता को यकीनी बनाया जा सके। समागम को संबोधन करते हुए पटियाला से संसद मैंबर श्रीमती परनीत कौर ने अस्पताल के निर्माण के लिए ज़मीन दान देने वाले गाँव के सोढी परिवार का धन्यवाद किया। प्राकृतिक चिकित्सा की महत्ता पर ज़ोर देते हुए उन्होंने कहा कि लोग अब कुदरती ढंग से इलाज करवाने के ढंग के प्रति विशेष रुचि दिखा रहे हैं जो शरीर को सेहतमंद बनाने में सहायता करता है। उन्होंने कहा कि आयुष अस्पताल पास के इलाकों के निवासियों के लिए वरदान साबित होगा।

पंजाब सरकार एस.सी. विद्यार्थियों का भविष्य बेहतर बनाने के लिए लगातार यत्नशील-साधु सिंह धर्मसोत

■ चंडीगढ़/विजय कुमार

पंजाब के सामाजिक न्याय, अधिकारिता और अल्पसंख्यक मंत्री स. धर्मसोत ने कहा है कि पंजाब सरकार जहाँ राज्य के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का भविष्य बेहतर बनाने के लिए लगातार यत्नशील है, वहीं इन विद्यार्थियों के साथ जुड़े हुए मसलों को हल करने के लिए भी गंभीर है। आज यहाँ सचिवालय में ज्वाइंट एक्शन कमेटी के प्रतिनिधिमंडल के साथ मुलाकात के दौरान स. धर्मसोत ने जत्थेबंदियों की साझी कमेटी द्वारा उठाई गई जायज़ माँगों को जल्द निपटाने का भरोसा दिया।

उन्होंने केंद्र सरकार द्वारा विभिन्न कोर्सों के लिए पहले निर्धारित फीसों को 75 प्रतिशत तक घटाने सम्बन्धी मामला मुख्यमंत्री के पास उठाने का भरोसा दिया। उन्होंने कहा कि फीस निर्धारन करने के लिए पास के राज्यों और विभिन्न यूनिवर्सिटियों द्वारा ली जाती फीसों को आधार बनाया जायेगा।

उन्होंने कहा कि प्राईवेट कॉलेज, अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न कोर्सों की पढ़ाई के लिए बुनियादी ढांचा मुहैया करवाए जा रहे हैं, इसलिए शिक्षा प्रणाली सुचारू ढंग से चलाए रखने के लिए उनके जायज़ मसलों का हल करना समय की जरूरत है। स. धर्मसोत ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा किये गए ऑडिट के दौरान जिन कॉलेजों द्वारा ऐतराज़ सामने आए हैं, से मूल रकम के अलावा ब्याज न वसूलने सम्बन्धी मसला भी मुख्यमंत्री के साथ विचारा जायेगा।

उन्होंने विभाग के अधिकारियों को हिदायत देते हुए कहा कि केंद्र सरकार द्वारा जारी एस.सी. स्कॉलरशिप की बकाया पड़ी राशि जल्द जारी करके प्रयोग सर्टिफिकेट केंद्र सरकार को जल्द भेजने को यकीनी बनाया जाए।

स्वास्थ्य मंत्री स. बलबीर सिंह सिद्धू ने 308 स्टाफ नर्सों को नियुक्ति पत्र सौंपे

2017-18 से अब तक 4000 कर्मचारियों की हो चुकी है भर्ती

■ चंडीगढ़/न्यूज नेटवर्क

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, पंजाब स. बलबीर सिंह सिद्धू ने नेशनल हैल्थ मिशन, पंजाब के अधीन 308 स्टाफ नर्सों को नियुक्ति पत्र सौंपे गए। इस सम्बन्धी विशेष समारोह राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण और प्रशिक्षण संस्था, फेज़-6 में करवाया गया। इसके दौरान स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, पंजाब स. बलबीर सिंह सिद्धू ने कहा कि इन स्टाफ नर्सों की तैनाती राज्य के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के ज़िला अस्पतालों, सब डिवीजनल अस्पतालों, सी.एच.सी. और पी.एच.सी. में की जायेगी। यह स्टाफ पंजाब के विभिन्न सरकारी अस्पतालों में जाकर लोगों को सेवाएं प्रदान करेंगे जिससे पंजाब के लोगों को अच्छी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने में मदद मिल सके।

स. बलबीर सिंह सिद्धू ने बताया कि इन स्टाफ नर्सों का मई 2018 में पारदर्शी ढंग से लिखित पेपर और स्किल टैस्ट लिया गया था और लगभग 670 स्टाफ नर्सों की भर्ती की जानी थी। इनमें से 534 स्टाफ नर्सों की पहले ही नियुक्ति की जा चुकी है। अब पंजाब में स्वास्थ्य सेवाओं को और बेहतर बनाने के उद्देश्य से और स्टाफ की ज़रूरत थी। इसके चलते अब और स्टाफ नर्सों की भर्ती की जा रही है। इसके चलते अब वेटिंग लिस्ट में से भी उम्मीदवारों की चयन किया गया है और अब 308 उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्र सौंपे जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि पंजाब राज्य में स्वास्थ्य संस्थाओं में अन्य पैरा मैडीकल स्टाफ जैसे कि फार्मासिस्ट, लैब टैक्नीशिअन आदि की नियुक्तियाँ भी जल्दी ही कर दी जाएंगी।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, पंजाब ने नव नियुक्त उम्मीदवारों को बधाई दी और कहा कि वह भाग्यशाली हैं कि उनको नौकरी के साथ-साथ समाज सेवा करने का भी मौका मिल रहा है। इसलिए वह समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए और निजी तौर पर रूचि लेकर लोगों की सेवा करें। इसके साथ जहाँ उनका समाज में रुतबा बढ़ेगा, वहीं स्वास्थ्य विभाग संबंधी लोगों का नज़रिया और बेहतर होगा। उन्होंने कहा कि जो कर्मचारी अच्छा काम करेंगे, उनका सम्मान किया जायेगा।

स. बलबीर सिंह सिद्धू ने बताया कि साल 2017 -18 से अब तक नेशनल हैल्थ मिशन, पंजाब के अधीन लगभग 4000 के करीब मैडीकल, पैरा मैडीकल और अन्य स्टाफ की भर्ती की जा चुकी है। इसी तरह और बहुत से पदों के लिए भर्ती प्रक्रिया चल रही है। इस मौके पर सचिव स्वास्थ्य कम मिशन डायरैक्टर नेशनल हैल्थ मिशन, पंजाब श्री कुमार राहुल और मैनेजिंग डायरैक्टर पंजाब हैल्थ सिस्टमज़ कोर्पोरेशन कम प्रोजैक्ट डायरैक्टर पंजाब स्टेट एडज़ कंट्रोल सोसायटी स. मनवेश सिंह सिद्धू विशेष तौर पर मौजूद रहे। इनके साथ डायरैक्टर स्वास्थ्य सेवाएं डॉ. अवनीत कौर, डायरैक्टर फैमिली वैलफेयर डॉ. रीटा भारद्वाज, डायरैक्टर नेशनल हैल्थ मिशन, पंजाब डॉ. परविन्दर पाल सिद्धू और मैनेजर (एच.आर.) श्रीमती दीप शिखा मौजूद थे।

Lic No : 933/ALC-4/LA/FN:1184

INNOVATIVE TECHNO INSTITUTE

CONSULTING DESIGN TRAINING

INNOVATIVE TECHNO INSTITUTE

ISO CERTIFIED 2015 COMPANY

IELTS • PTE • TOEFL

SPOKEN ENGLISH

TOURIST VISA | STUDY VISA | PR

WORK PERMIT | HOLIDAY PACKAGES

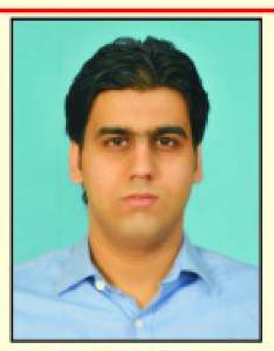

Ankush Sharma

Chartered Engineer

Alumni M.S.(Software Engineering), BITS Pilani

CANADA AUSTRALIA USA U.K SINGAPORE EUROPE

9988115054 • 9317776663

REGIONAL OFFICE : S.C.O No. 10, Gopal Nagar, Near Batra Palace, Jal.

HEAD OFFICE : S.C.O No. 21-22, Kuldip Lal Complex, Highway Plaza, GT Road, Adjoining Lovely Professional University, Phagwara.

E-mail : ankush@innovativetechin.com • hr@innovativetechin.com

Website : www.innovativetechin.com • FB/Innovativetechin